P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-VIII April-2015
E: ISSN NO.: 2349-980X

बीकानेर की लघु चित्रण परम्परा

सोहन लाल बलाइ
व्याख्याता,
चित्रकला विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
सरदारशहर, चूरू, राजस्थान

सारांश

बीकानेर नगर के जूनागढ़, जैन चिन्तामणि मन्दिर, लक्ष्मीनाथ मन्दिर, बीकाजी की टेकरी आदि में अदृश्य भित्ति–चित्रण हुआ । जूनागढ़ के चन्द्रमहल व फूलमहल में शिकार के दृश्यों, हाथी–घोड़ों के साथ शाही जुलूस, पानी में उछल–कूद करती मीन कन्याओं, राज्य के शासकों द्वारा शाही दरबार लगाने, खेलने व कृष्णलीला सम्बन्धी प्रसंगों में राधा–कृष्ण प्रेम–प्रसंग, गौ–दोहन, कृष्ण द्वारा कालिय–दमन, चीरहरण–रक्षण, ग्वालिनों द्वारा स्नान करने, गौवर्द्धन–धारण व अष्टभुजा एवं अन्य देवताओं से सम्बन्धित चित्रण किया गया हैं। छत व दीवार आदि पर चारों ओर राग–माला व नायिका के साथ कृष्णलीला के विभिन्न प्रसंगों का चित्रण है। इनमें गोकुल में ग्वाले व ग्वालिने गायें हाँक रहे है और कृष्ण एक ऊँचे स्थान से उन्हें निहार रहे हैं। कामधेनु, हस्ती–उद्धार, कृष्ण–सुदामा, दानलीला, गायों के मध्य बाँसुरी बजाते कृष्ण, गोपियों के साथ होली खेलते कृष्ण, वैकुण्ठ में कृष्णव ग्वालिनों द्वारा स्नान आदि सम्बन्धी चित्र उल्लेखनीय हैं।

बादलमहल में नभ में बादलों के श्वेत और श्याम वर्ण में चित्रित इस महल में ऐरावत पर आरूढ़ देवराज इन्द्र को भी दर्शाया गया है। कर्ण महल, अनूपमहल, सुजानमहल, गजमन्दिर, डूँगर–निवास, सरदार–निवास व छत्रमहल, मदनमोहन मन्दिर, लक्ष्मीनाथ मन्दिर, वैष्णव मन्दिर, दाऊजी का मन्दिर आदि में भी नयनाभिराम भित्ति–चित्रण है।

शोध–पत्र का उद्देश्य है कि बीकानेर में बने विभिन्न स्थानों पर भिन्न–भिन्न प्रकार की कलाकृतियो के कला वैभव को ओर कला प्रेमियो का ध्यान आर्कषित करना है।

मुख्य शब्द : अलंकृत, पुनरूद्धार, स्वर्णरेखा, लता, अवशेष।

परिचय

लघु आकार के पारम्परिक चित्र भारतीय चित्रकला की मूल्यवान धरोहर है। राजस्थान में इनका प्रचलन लोगों के दैनन्दिन जीवन में गहराई तक जुड़ा है। अधिकांश घरों की दीवारों पर लघुचित्र टंगे व बने हुये देखे जा सकते है।

राजस्थानी लघु चित्रों में जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, कोटा, बूंदी, किशनगढ़, नाथ द्वारा आदि चित्र–शैलियों में बने चित्र महत्वपूर्ण है। यहां के चित्र कागज, लकड़ी, दीवार (भित्ति) आदि पर बने हुये है। जो यहां के राजसी वैभव और विलासिता प्रकृति, आम आदमी की जीवन–चर्या तथा धार्मिक एवं लोक जीवन के प्रचलित विश्वासों से सम्बद्ध रखते है।

बीकानेर में भित्ति–चित्रों की एक समृद्ध परम्परा रही है। प्राचीनता की दृष्टि से तो भित्ति–चित्र के आलेखन में जैन धर्म का ही प्रभाव दर्शनीय है, परन्तु भागवत–धर्म का प्रभाव भी कम नहीं रहा है। यद्यपि बीकानेर राज्य के भित्ति–चित्रण का आलेखन सत्रहवीं सदी के उत्तरार्द्ध व अठारहवीं सदी से प्रारम्भ हुआ है। यह आलेखन उन्नीसवीं सदी तक अबाध गति से चलता रहा। बीकानेर नगर के जैन चिन्तामणि मन्दिर और बीकानेर के कुल देवता लक्ष्मीनाथ के मन्दिर सहित बीकानेर के संस्थापक राव बीका के मृत्यु–स्मारक (बीकाजी की टेकरी) पर अदृश्य भित्ति–चित्रण हुआ है। बीकानेर के राज–परिवार से जुड़े, चाहे राज–प्रसाद हों, मन्दिर हों अथवा उनके मृत्यु–स्मारक, उनके प्रारम्भिक निर्माण, समय–समय पर उनकी सजावट, जिसमें भित्ति–चित्रण के तकनीकी कार्य, यथा रंग–संयोजन व भित्ति–आधार आदि भी थे, के साथ मरम्मत आदि के कार्य की तिथि, वार, माह व वर्ष का लेखा–जोखा बीकानेर राज्य की बड़े कमठाणे की बहियों में उपलब्ध होता है। किन्तु दुर्भाग्यवश ये बहियाँ टूटवाँ रूप में अठारहवीं सदी से प्रारम्भ होकर उन्नीसवीं सदी के अन्त तक की ही मिलती हैं। इनमें भित्ति–चित्रण का हिसाब–किताब व कहीं–कहीं कारीगरों का जातिगत, यथा कारीगर, चूनगर, उस्ता, जयपुरिया, दक्खनी अथवा मथेन इत्यादि नामों का उल्लेख भी मिलता है। इससे इन राजकीय दस्तावेजों से बीकानेर के राज–प्रसाद व मृत्यु–स्मारकों के भित्ति–चित्रण किस विशिष्ट

चित्रकार की कलम से हुए– निर्धारण करने में कुछ सहायता मिलती है। किन्तु यहाँ के श्रेष्ठि वर्ग द्वारा निर्मित करवाए गए कुछ जैन एवं वैष्णव मन्दिरों में चित्रकारों के नामों का भी उल्लेख मिल जाता है।

राज–प्रासादों में बीकानेर का प्राचीन दुर्ग जूनागढ़ है। इसके संस्थापक राजा रायसिंह (1571–1612ई.) सहित महाराजा गंगासिह (1887–1943ई.) तक के 'सोलह शासकों ने लगभग 21 महलात' जो पांच मंजिलों में स्थित हैं, का निर्माण करवाया था। इनमें कुछ अपवादों को छोड़, अधिकतर महलों में भित्ति–चित्रण हुआ हैं। यह चित्रण अढ़ाई सौ से लगाकर सौ वर्ष पुराना है। जूनागढ़ राज–प्रसादों का कोई भी विशिष्ट कक्ष किसी एक शासक द्वारा भित्ति–चित्रण से अलंकृत नहीं हुआ। एक शासक अपने 'शासनकाल में जितना सम्भव होता, उसे अपनी रुचि के चित्रो से अलंकृत करवा दता। बाद में उनके उत्तराधिकारी शेष बचे अथवा अतिरिक्त कार्य को अपनी रुचि के अनुसार अपने संरक्षित चित्रकारों से पूरा करवाने के प्रयत्न में रहते थे। अनेक महलों में पूर्व में हुए चित्रण का पुनरुद्धार भी कर दिया जाता था। फलस्वरूप यहां के राज–प्रासादों के भित्ति–चित्रण में भी राज्य में हुए लघुचित्रण की भाँति मुगल शैली, दक्खनी शैली व राजपूती शैली के चित्रांकन का व्यापक आलेखन मिलता है। यही नहीं, मुगल चित्रकला में अवधी शैली व राजपूती शैली में बीकानेरो, जोधपुरी, जयपुरी व नागौरी शैली का भी अंकन हुआ।

जूनागढ़ के निर्माता राजा रायसिंह के बनाए हरमन्दिर, सूरमन्दिर, चौबारा व रायनिवास तो आज भी मूल रूप में अवस्थित है। यद्यपि राजा रायसिंह के उत्तराधिकारियों ने उनके बनवाये इस रायनिवास में फूलमहल और चन्द्रमहल व गजमन्दिर आदि महलों को विकसित करवाया गया। इनमें चन्द्रमहल व उसकी साल तथा फूलमहल और उसकी झरोखा गैलेरी भित्ति–चित्रण की दृष्टि से काफी समृद्ध है। इन दोनों महलों को महाराजा गजसिंह ने अपनी दो पटरानियों, चन्द्रकोर जैसलमेरी और फूलकोर झाली, के नाम पर क्रमश: चन्द्रमहल और फूलमहल के नाम दिए। वैसे तो इन दोनों ही महलों में दीवारों पर सोने की उभारदार रेखाएं फूलों के गुच्छों और जलपात्रों के रूप में चित्रित भित्ति–चित्रों को एक–दूसरे से अलग करते दशायी गई हैं। नीली रेखाओं में चित्रित विभिन्न प्रकार के जलपात्रों के मध्य में किसी–न–किसी पशु अथवा पक्षी का सूक्ष्म चित्रण भी है। चन्द्रमहल के मुख्य कमरे में लकड़ी की छत पर फूल–पत्तियों के अंकन की ही अधिकता है। केवल छत के नीचे कुछ उभारदार खम्भों पर एक एक स्त्री के मुँह तक का चित्रण है। किन्तु इस महल की साल, जो चन्द्रमहल के तीन तरफ है, पर फूल–पत्तियों के अतिरिक्त, उसकी छत के नीचे की ओर बहुत सुन्दर लघु–चित्रण हुआ है। ये चित्र षिकार के दृश्यों, हाथी–घोड़ों के साथ शाही जुलूस, पानी में उछल–कूद करती मीन कन्याओं, राज्य के शासकों द्वारा शाही दरबार लगाने, जूनागढ़ स्वंय का अंकन, चौगान खेलने व कृष्णलीला सम्बन्धी प्रसंगों में कुंज में राधा–कृष्ण प्रेम–प्रसंग, कृष्ण–राधा द्वारा गौ–दोहन, कृष्ण द्वारा कालिय–दमन, चीरहरण–रक्षण, ग्वालिनों द्वारा स्नान करने, गौवद्धन–धारण व अष्टभुजा एवं अन्य देवताओं से सम्बन्धित हैं ।

साल के शहतीरों तथा एक झरोखे की छत पर मेघयुक्त नभ में अप्सराएँ र्दशाई गई हैं। चन्द्रमहल के तीन दरवाजे है, जो 'राधाकृष्ण दरवाजों' के नाम से प्रसिद्ध है। इन पर भगवान कृष्ण को कमल के रूप में दिखाया गया है, वहों राधा को कृषक परिधान में दर्शाया गया है। इनके पिछवाड़े में बादल और पहाड़ का अंकन है तथा सम्मुख यमुना नदी में कमल उगे हैं तथा चिड़ियाँ उड़ रही हैं। साल के कुछ अन्य दरवाजों पर चित्रण–कार्य महाराजा गजसिंह के बाद का है।

इसी प्रकार फूलमहल, जो चन्द्रमहल की अपेक्षा बड़ा है, स्वयं तथा उसके आगे की साल भित्ति–चित्रण की दृष्टि से भव्य कहे जा सकते हैं। इसकी छत व दीवार आदि पर चारों ओर राग–माला व नायिका के साथ कृष्णलीला के विभिन्न प्रसंगों का चित्रण है। इनमें गोकुल में ग्वाले व ग्वालिने गायें हाँक रहे है और कृष्ण एक ऊँचे स्थान से उन्हें निहार रहे हैं। कामधेनु, हस्ती–उद्धार, गौवर्द्धन–धारण, कृष्ण–सुदामा, दानलीला, गायों के मध्य बाँसुरी बजाते कृष्ण, गोपियों के साथ होली खेलते कृष्ण, वैकुण्ठ में कृष्णव ग्वालिनों द्वारा स्नान आदि सम्बन्धी चित्र उल्लेखनीय हैं। इसकी छत के शहतीर पर भो बादल और परियों को उड़ते दर्शाया गया है। फूलमहल के अगले कक्ष, साल, में सभी प्रमुख हिन्दू देवी–देवताओं की चित्रित मूर्तियाँ लगी हुई हैं। इसी भाँति इसके आगे झरोखे के पास छोटे–से कमरे की छत के नीचे की ओर शाही शिकार की सवारी, हाथी व अन्य जंगली जानवरों के शिकार के दृश्य चित्रित हैं और शेष भाग सुन्दर फूल–पत्तियों से सुसज्जित है।

महाराजा गजसिंह ने उक्त महलों के अतिरिक्त उनके सामने ही बादलमहल बनवाकर उसे चित्रित करवाया था। इसमें बीकानर के स्थानीय मथेन चित्रकारों ने बादलों का चित्रण बड़े ही रोचक ढंग से किया है। इन्हीं बादलों के कारण इसे बादलमहल का नाम मिला। नभ में बादलों के श्वेत और श्याम वर्ण में चित्रित इस महल में ऐरावत पर आरूढ़ देवराज इन्द्र को भी दर्शाया गया है।

दुर्ग का एक पुराना महल कर्णमहल भित्ति–चित्रण की दृष्टि से काफी महत्त्वपूर्ण माना जाता रहा है। इसे आगरा किले के खासमहल और दिल्ली के लालकिले के दीवान–ए–खास, रंगमहल और मुमताजमहल की लघु अनुकृति माना जाता है। इसका निर्माण लगभग सन् 1650ई. में महाराजा अनूपसिंह ने अपने पिता महाराजा कर्णसिंह की स्मृति में करवाया था। इस महल की मुख्य छत पर जो भित्ति–चित्र हैं, वे अब धुँधले पड़ गए हैं। किन्तु इस महल के चारों ओर के बरामदे की छत पर सोने का धरातल और उस पर फूल, महीन डण्ठल व नोकदार पत्तियों का बहुत सुन्दर आलेखन हुआ है। इन्हीं भित्ति–चित्रों के नीचे की ओर छोटी–बड़ी हरी पत्तियों व लाल फूलों को चित्रित किया गया है। इसके अतिरिक्त इस महल के सभी स्तम्भ भी सौन्दर्यपूर्ण अलंकरणों से आच्छादित हैं।

कर्ण महल के पश्चात् अनूपमहल इस दुर्ग का श्रेष्ठतम कलापूर्ण भवन है। इसकी छतें, दीवारें और खम्भे सोने से जड़े हुए हैं। इस महल के अन्दरूनी भाग में लाल रंग की पृष्ठभूमि में स्वर्ण–वर्ण के आलंकारिक पुष्प, पत्तियां एवं डण्ठल चित्रित किए गए है। रेखाओं में लय और गति का आभास होता है तथा कुछ स्थलों पर सागर–उर्मियों को पुष्प–गुच्छों में गुम्फित किया गया है। सिन्दूरिया पृष्ठतल पर सभी चित्र प्लास्टर से उभारकर स्वर्ण–वर्ण में आच्छादित किए गए हैं। बीच–बीच में गहरे हरे रंग का जंगल–सा दर्शाया गया है। अठारहवीं सदी का अनूपमहल का यह चित्रण बीकानेर दुर्ग में मुगल और दक्खनी चित्र–शैली का अनुपम उदाहरण है। इस महल के द्वार–पट्टों पर श्रीकृष्ण–लीला के दृश्य अंकित हैं। इनमें पूतना–वध, वासुदेव द्वारा बालकृष्ण को लेकर यमुना पार करना, कृष्ण की बहिन का कंस द्वारा मारा जाना और उसका विद्युत रूप में परिवर्तित होना, कृष्ण का अर्जुन को गीता–उपदेश तथा भागवत पुराण के अन्य कथानकों का अंकन मिलता है। एक अन्य द्वार–पट्ट पर गोचारण, बकासुर–वध, हयग्रीव–वध आदि चित्र–संयोजनों में अमानुशो शक्तियों के वृहद् आकार एवं भयावह आकृतियों का चित्रण है। परन्तु कृष्ण का चित्रण अत्यन्त माधुर्यपूर्ण हुआ है। इसके एक अन्य दरवाजे पर बरसाती तूफान में हंसों को उड़ते हुए दर्शाया गया। सुप्रसिद्ध कला–विद्वान ए. के. कुमारस्वामी का ध्यान जब इसकी ओर गया तो उन्होंने इसे राजपूती चित्र–शैली का काफी पुराना अंकन माना, किन्तु यह सही नहीं है। इसी महल के दो अलिन्दों में रंगीन कांच के टुकडों से राम–दरबार के भव्य चित्र दर्शनीय हैं। इस महल का भित्ति–चित्रण उस्ता, दक्खनी व जयपुरिया कलाकारों द्वारा किया गया।

महाराजा अनूपसिंह के उत्तराधिकारी महाराजा सुजानसिंह ने रायनिवास के ऊपर सुजानमहल बनवाया। किन्तु 1739 व 1808ई. में बाहरी आक्रमण से उसे काफी नुकसान हुआ। इसके तीन दरवाजों पर उन्होंने मुगल शैलो में भगवान कृष्ण के प्रसंगों को चित्रित करवाया है। इससे अधिक इसमें विशेष चित्रण नहीं है।

महाराजा अनूपसिंह के पश्चात् इस दुर्ग में महाराजा गजसिंह ने सर्वाधिक निर्माण करवाया था। उनके समय के महलों में गजमन्दिर का अपना विशिष्ट स्थान है। इस महल में दर्पणों को उभारदार स्वर्णरेखाओं के मध्य सजाया गया है। यह उभारदार स्वर्णरेखा बेल के रूप में आलंकारिक ढ़ग से बनाई हुई है। इसमें पुष्प एवं पत्तियों का आलेखन भी हुआ है। कहीं–कहीं पुष्प–गुच्छ व फलपात्रों को भी संयोजित किया गया है। अँधेरे में एक दीपक के प्रकाश से ही स्वर्णरेखाओं के मध्य जड़े हुए दर्पणों के प्रतिबिम्बों के कारण दीपमाला जैसा आभास होता है। इस महल के एक छोटे–से भाग में मूल्यवान पत्थर, सुनहरी लताओं और पुष्पों की पंखुड़ियों से निबन्धित किए हुए हैं। इस महल की मुख्य छत सिन्दुरिया वर्ण की छटा को स्वर्णवर्णी उभार खाती रेखाओं से अलंकृत है। इन अलंकृत रेखाओं के मध्य ड्रेगन, सिंह व अप्सराओं का भी चित्रण हुआ है। इसी प्रकार इस छत की सीमाएं पुष्प–पत्तियों की अलंकृत लताओं से दर्शायी गई हैं।

गजमन्दिर के दरवाजों व एक हटड़ी पर सुनहरी, लाल, नीले, हरे रंग में राधाकृष्ण के चित्र बने हुए हैं। इसी महल के एक कक्ष में ब्लूपाटरी के समान चित्र भी चित्रित हैं, जिनके लिए कहा जाता है कि ये चित्र दक्खनी चित्रकारों द्वारा बनाए हुए है। उन्नीसवीं सदी में महाराजा सरदारसिंह ने गजमन्दिर की गेलेरी में बीकानेर के लक्ष्मीनाथ, राम–सीता–लक्ष्मण, श्रीनाथजी की आकृतियों का चित्रण करवाया।

महाराजा गजसिंह के पश्चात् उनके उत्तराधिकारियों में महाराजा सूरतसिंह ने जूनागढ़ के महलों में सर्वाधिक चित्रण–कार्य करवाया। उनके द्वारा अनूपमहल के ऊपर की ओर दो महल, आनन्दबाई महल व रंगमहल, चित्रण की दृष्टि से काफी समृद्ध हैं। रंगमहल में कुछ मोटी स्वर्णिम रेखाओं के मध्य फूल–पत्तियों व लताओं का लाल, नीले, हरे व पीले रंग का अत्यन्त ही मनोहारी चित्रण है। इसी प्रकार आनन्दमहल में भी अनूपमहल की तर्ज पर स्वर्णविहिन भित्ति–चित्रण किया हुआ है जो काफी धुँधला पड़ गया है।

महाराजा सूरतसिंह के पश्चात् सर्वाधिक महल महाराजा डूँगरसिंह ने बनवाए। इनमें चित्रण की दृष्टि से डूँगर–निवास, सरदार–निवास व छत्रमहल उल्लेखनीय हैं। डूँगरनिवास में भी भित्तियों पर पुष्प –पत्तियों के आलंकारिक रूपों के मध्य यत्र–तत्र अन्य पक्षी भी अंकित किए गए हैं। महाराजा ड्गरसिंह के बनाए महलों में सबसे ऊँचा महल छत्रमहल है। इसकी छत व भित्तियों पर कृष्ण को रासलीला करते हुए दिखलाया गया है। साथ ही फूल–पौधों एवं बादलों का भी चित्रण हुआ है।

राजप्रसादों के साथ ही राजपरिवार से जुड़े देवीकुण्डसागर स्थित कुछ मृत्यु–स्मारकों (छतरियों) की छतों पर भित्ति–चित्रण के धुँधले अवशेष मिलते हैं। इनमे रासलीला और श्रीकृष्ण की विविध लीला विषयक चित्रों की बहुलता है। महाराजा सूरतसिंह के काम में फूलमहल के दरवाजों पर चित्रण–कार्य के अतिरिक्त बीकानेर राज्य के षासकों से सम्बद्ध देवीकुण्डसागर स्थित मन्दिरों की छतों पर भी चित्रण–कार्य हुआ। इसी प्रकार जूनागढ़ स्थित हरमन्दिर, देवीद्वार, सागर व शिवबाड़ी के मन्दिरों को छतों पर भी राज्य के विभिन्न शासकों द्वारा समय–समय पर करवाया गया भित्ति–चित्रण मिलता है। शिवबाड़ी स्थित शिवालय के निज–मन्दिर में जयपुरिया कलाकारों द्वारा अन्य चित्रण के साथ महाराजा डूँगरसिंह और महाराजा गंगासिंह के चित्रण उल्लेखनीय हैं।

बीकानेर नगर का मदनमोहन मन्दिर, लक्ष्मीनाथ मन्दिर में दशावतार की एवं कृष्णलीला की चित्रावलियों के अवशेष दिखलाई पड़ते हैं, वैष्णव मन्दिर, दाऊजी का मन्दिर, भी अपने भित्ति–चित्रण की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। मन्दिर के एक कमरें में एक 'शताब्दी पुराने बने चित्रों की आभा अभी भी बरकरार है। मन्दिर के मुख्य द्वार के दाहिनी ओर बने कमरे की छत व दीवारों पर कृष्ण, राधा, रामचन्द्रजी, लक्ष्मणजी, हनुमानजी व गणेशजी के चित्रों के अलावा पूरे कमरे में बेल–बूटों, फूल–पत्तियों का सुन्दर व बारीक काम किया हुआ है। बीच–बीच में छोटी–छोटी चिड़ियों व हंसों के चित्र बने हुए हैं। कमरे की छत पर स्वर्णिम नक्काशी का उभरा हुआ काम किया हुआ है।

इन मन्दिरों के अतिरिक्त बीकानेर में बाहेतियों की बगेची में महारास की चित्रावली में कृष्ण एवं गोपिकाओं के नाचते हुए के कुल आठ चित्र है। इन सभी के मध्य एक चित्र में भगवान कृष्ण को नगाड़ा बजाते हुए दर्षाया गया है। इसी प्रकार मरुनायकजी की बगेची में रामकथा और कृष्णलीला, दोनों का अंकन मिलता है। रामकथा में सीताहरण के प्रसंग में हुए रावण–जटायु युद्ध, लंकादहन, सेतु– निर्माण और राम–रावण के मध्य हुए युद्ध का चित्रण उल्लेखनीय है। भगवान राम के रावण से युद्ध में विजय के पश्चात् अयोध्या लौटने का चित्रण है।

जैन मन्दिरों में बीकानेर नगर के चिन्तामणि मन्दिर व भाण्डाशाह मन्दिर भित्ति–चित्रण की दृष्टि से उल्लेखनीय रहे है। जैन आदिनाथ मन्दिर व चाँदकुँवरी जैन मन्दिर भी अपने प्राचीन भित्ति–चित्रांकन के लिए काफी समृद्ध हैं। जिस प्रकार बीकानेर राज्य का श्रेष्ठिवर्ग मन्दिर–निर्माण में रुचि लेता था, उसी भाँति उन्नीसवीं सदी में उन्होंने अपने मूल निवास–स्थान में बड़ी–बड़ी हवेलियां बनवाई और उनमें स्थानीय और बाहरी चित्रकारों द्वारा भित्ति–चित्रण करवाया।

बीकानेर में लघु भित्ति–चित्रण के साथ ही यहां पर उस्ता कलाकारो (हिसामुद्दीन उस्ता) द्वारा ऊंट की खाल पर स्वर्णयुक्त मीनाकारी। ऊंट की पारदर्शी खाल से आभूषण, लैम्प, सुराही, ढाल, डिब्बी, इत्रदानी, कुम्पियां, खिलौने एवं विभिन्न प्रकार के वस्तुएं लघु चित्रकारी से बनी है।

बीकानेर राज्य के विभिन्न अंचलों में लगभग सौ से दो सौ वर्ष पुरानी सकड़ों हवेलियां हैं। दुर्भाग्यवश अनेक हवेलियां अपना मूल स्वरूप खोती जा रही है। बीकानेर से जैसलमेर के पुराने व्यापार–मार्ग पर बीकानेर अंचल में पालीवाल (ब्राह्मण) धनाढ्य व्यापारियों की पुरानी हवेलियों की यही स्थिति है। उनमें अन्दर किया गया भित्ति–चित्रण अब झलक–मात्र के रूप में ही दिखाई देता है और वे पूरी तरह ध्वस्त होने की स्थिति में है। श्रेष्ठिवर्ग की इन हवेलियों के अतिरिक्त उनकी बनाई बावड़ियाँ, कुएँ एवं छत्रियाँ (मृत्यु–स्मारक) भी भित्ति–चित्रण की दृष्टि से काफी समद्ध हैं। इनमें श्रेष्ठिवर्ग ने अपनी–अपनी रुचि के विषयों के साथ लोक–शैली में प्रचलित प्रेम–प्रसंगों का चित्रण करवाया, वह अद्वितीय कहा जा सकता है। हवेलियों का पूरा भाग चित्रित करने की परम्परा थी, किन्तु इसके लिए भी हवेलियों में एक ऐसा कमरा होता था जिसे 'रंग का कमरा' या 'रंग का चोबारा' कहते थे। इसके अन्दर का प्रत्येक भाग रंग–बिरंगे चित्रों, फूल–पत्तियों, वृक्षों एवं हरी–भरी लताओं आदि से चित्रित किया जाता था।

शोध–पत्र का उद्देश्य है कि बीकानेर में बने विभिन्न स्थानों पर भिन्न–भिन्न प्रकार के लघु चित्रण एवं विभिन्न कलाकारों द्वारा बनाई गई विभिन्न माध्यम की कलाकृतियों को सभी के समुख रखना जिससे कला वैभव की दुनिया में अपना स्थान रख सकें।

सन्दर्भ

1. कला विलास – भारतीय चित्रकला का विवेचन :– आर. ए. अग्रवाल
2. भारतीय चित्रकला का इतिहास :– अविनाश बहादुर वर्मा
3. भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास :– डॉ. रीता प्रताप
4. राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास :– डॉ. गोपीनाथ शर्मा
5. राजस्थान, संस्कृति, कला एवं साहित्य :– डॉ. प्रेमचन्द गोस्वामी , आदि।